

पद्मश्री अरुणिमा सिन्हा, लखनऊ द्वारा लिखी गई पुस्तक "Born Again on the mountain" का गुजराती भाषा में अनुवादित पुस्तक "विश्वासनु एवरेस्ट" विमोचन समारोह। (दिनांक : २० मार्च, २०१८)

- हिन्दी की जानीमानी कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहाण की कुछ पंक्तियां आज मुझे याद आ रही है :

"चमक उठी सन सत्तावन में,
वह तलवार पुरानी थी ।
बुंदेलों हरबोलों के मुँह,
हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी
वह तो झाँसी वाली रानी थी ।"

ये पंक्तियां मेरे मन में बार-बार गूँज रही थी और मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा था की मेरे दाईं और एवरेस्ट को सर करनेवाली एक वीरांगना बैठी है । राजभवन में यह कार्यक्रम हो रहा है, तो इससे राजभवन का भी गौरव बढ़ा है ।

- आजकल मैं अरुणिमा जी की पुस्तक पढ़ रहा हूँ । आज हमने इस पुस्तक का गुजराती में जो अनुवाद हुआ है उसका विमोचन किया । मेरा मानना है की सभी अच्छी पुस्तकों का भारत की सभी भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए । हमारी सभी प्रादेशिक भाषाओं में अनेक श्रेष्ठ पुस्तकें लिखी गई हैं लेकिन उनका अनुवाद न होने पर उनकी अखिल भारतीय पहचान नहीं बन पाई है । इसीलिए यह जरूरी है की अखिल भारतीय स्तर पर अच्छी पुस्तकों की पहचान बननी चाहिए । मुझे इस बात की खुशी है की अरुणिमा जी के द्वारा लिखी गई पुस्तक का गुजराती में भी अनुवाद हुआ है ।

- अरुणिमा जी असाधारण आत्मविश्वास एवम असाधारण संकल्प शक्ति का जीवंत और मूर्तिमंत प्रतीक है। हमारे यहाँ माँ दुर्गा को शक्ति कहा गया है और नारी की अद्भुत शक्ति की बात हमारी पौराणिक कथाओं में हमें मिलती है। आज के समय में अरुणिमा सिन्हा जी जैसी साहसिक महिला में हमें माँ दुर्गा की शक्ति दिखाई देती है। मुझे लगता है कि अरुणिमा सिन्हा जी की जीवन कथा से देश के युवाओं को ही नहीं अपितु समाज के सभी लोगों को जबरदस्त प्रेरणा मिल सकती है। आखिर तो किसी का जीवन चरित्र या किसी की आत्मकथा को हम क्यों पढ़ते हैं ? उस जीवन चरित्र या आत्मकथा के मुख्य पात्र के जीवन में ऐसी कौन सी चीजें थी जिन्होंने उस व्यक्तित्व का गठन किया, इन बातों को हम पहचान सकें इसीलिए हम महान पुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ते हैं।
- स्वामीजी हमारे बीचमें बिराजमान हैं जो आध्यात्मिक व्यक्तित्व हैं। हमारी संस्कृति में शरीरबल और आत्मबल दोनों में आत्मबल पर ज्यादा जोर दिया गया है। शरीरबल की कोई सीमा होती है जबकि आत्मबल अमर्यादित होता है। अरुणिमा सिन्हा जी भी उसी असीम आत्मबल का प्रतिनिधित्व करती हैं। स्वामीजी ने अपने प्रतिभाव में फोकस की बात कही है। यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। स्वामीजी के मतानुसार अरुणिमा जी के जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम अपनी शक्ति को बिखरने न दें अपितु उसे केन्द्रित करें तथा सत्य की तरफ आगे बढ़ें। हमारे प्रयत्न जितने ही केन्द्रित होंगे उतनी ही विजय की संभावना बनी रहेगी, यह बात हमें अरुणिमा जी की आत्मकथा को पढ़कर सीखने को मिलती है।

- व्यक्ति के व्यक्तित्व को गढ़ने में उसके परिवार का बहुत बड़ा योगदान होता है। इस पुस्तक में अरुणिमा जी ने अपने परिवार के सदस्यों के बारे में भी कुछ टिप्पणियाँ की हैं जिनसे पता चलता है कि उनका परिवार उनके प्रयासों में सदैव सकारात्मक रहा है। हमारे आम जीवन में कभी-कभी हम छोटे बच्चों को टोकते हैं कि यह मत करो, वो मत करो, यह अच्छा नहीं है, इसमें खतरा है इत्यादि। ऐसा करने से उनको प्रोत्साहन देने के बजाय हम उनको हतोत्साहित करते हैं। अरुणिमा सिन्हा जी की आत्मकथा हमें यह भी सिखाती है कि हमें हमारे बच्चों को सकारात्मक दृष्टि रखकर प्रोत्साहन देना चाहिये। ऐसा सकारात्मक पारिवारिक वातावरण ही अरुणिमा सिन्हा जी जैसी बेटियों को बना सकता है।
- आज के अवसर पर मैं यह कहूँगा कि अरुणिमा सिन्हा एक योद्धा हैं जिसे उसके परिवार का पूरा सपोर्ट मिला है। उनके संकल्प की दृढ़ता, लक्ष्य से पीछे न हटने की मानसिकता तथा प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय पाने की प्रबल आकांक्षा ये सभी बातें उनके व्यक्तित्व में से झलकती हैं।
- आज के अवसर पर हमें कई दिव्यांग भाईयों-बहनों को पुरस्कृत किया। उन्होंने ऐसे कार्य किए हैं जो पूर्णरूप से स्वस्थ व्यक्ति भी नहीं कर पाते हैं। ऐसे कई व्यक्तित्व हैं जिन्होंने दिव्यांग होने के बावजूद भी असाधारण ऊँचाईयों को प्राप्त किया है। हेलेन केलर, अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रूसवेल्ट, अंग्रेजी कवि मिल्टन, भक्त कवि सूरदास, ये कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिन्होंने अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी असाधारण सिद्धियाँ प्राप्त कीं। इस प्रकार के उदाहरणों की शृंखला में बहन अरुणिमा

जी का नाम भी जुड़ गया है, यह एक बहुत खुशी की बात है। हताशा और निराशा की क्षणों में ऐसे लोगों के उदाहरण हमारे मन में नई आशा, उमंग, उत्साह और सकारात्मकता पैदा कर सकते हैं। इस दृष्टि से ऐसे लोगों के योगदान को जितना भी हम पढ़ें, जानें, सराहें वो कम है।

- प्रतिकूल परिस्थितियों में यदि कोई चीज हमारी मदद कर सकती है तो वह है हमारा आत्मबल। जिन-जिन लोगों ने अपने असाधारण आत्मबल पर विश्वास रखकर, असाधारण सिद्धियाँ प्राप्त की है वैसे व्यक्तियों को हमें प्रणाम करना चाहिये। अरुणिमा सिन्हा भी एक ऐसा व्यक्तित्व है जिनके असाधारण आत्मबल को साधुवाद देना चाहिये। मैं उनको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और अपनी बात समाप्त करता हूँ।